विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

रूपम कुमारी

वर्ग -सप्तम्

विषय -हिन्दी

दिनांक - 12-11-20

|| अध्ययन सामग्री ||

सुप्रभात बच्चों, पिछली कक्षा से आप कहानी पढ़ते आ रहे हैं -कर्तव्य का पुण्य जिसको लिखा है -मालती शंकर ने । अब तक आपने पढ़ा कि राजा, साधु और किसान तीनों मृत्यु के बाद यमराज के पास पहुंचते हैं और यमराज उन्हें बैठने का इशारा करते हैं , अब आगे - थोड़ी देर में यमराज ने काम करना बंद कर दिया । उन तीनों की तरफ देखा । वे

सोचने लगे ,क्यों ना आज देखें कि आदमी अपने कर्मों के बारे में खुद कैसे सोचता है । उन्होंने कहा, " राजन जीवन भर दूसरों को फैसला सुनाते रहे । तुम बताओ तुमने अब तक जो काम किए उनके अनुसार तुम्हें स्वर्ग मिलना चाहिए या नरक ?"

राजा बोला ," यमराज मैं क्षत्रिय कुल का हूं । मैंने अपने राज्य का विस्तार किया । खूब दान -पुण्य किया । धर्मशालाएं बनवाएं, मंदिर बनवाए ,देवी देवताओं की मूर्तियां सोने से मढ़वाईं , भगवान के धाम में मुझे एक स्थान तो मिलना चाहिए ।

यमराज ने अब साधु से कहा, "आप क्या सोचते हैं ? आप किस के अधिकारी हैं?"साधु

ने उत्तर दिया ," धर्मराज ! मैं ब्राह्मण कुल में जन्मा हूं । मैंने धर्म शास्त्र का अध्ययन किया । तीर्थ गया । भगवान का नाम लेने के लिए मैंने संसार त्याग दिया । धर्म का प्रचार किया । दिन-रात पतित पावन का नाम रटता रहा ।बस, उनके दर्शनों की कसर थी । वह समय आ गया है । मुझे उनके धाम जाने से कौन रोक सकता है ?

यमराज ने किसान से प्रश्न करना चाहा । पर किसान तो पहले कांप गया और गिड़गिड़ाया, "प्रभु ! मुझसे क्या पूछते हैं? किसान का बेटा हो ना शास्त्र पढ़ सका, राम मंदिर बनवा सका । रात- दिन बैलों के साथ खेतों पर जुता रहा। भजन कीर्तन तक का समय ना निकाल सका । भला मुझे स्वर्ग

कहां ? " किसान ने इतना कहकर गर्दन झुका ली ।

- ***गृह कार्य - कहानी के दिए गए अंशु को ध्यानपूर्वक पढ़ें , कठिन शब्दों को चुनकर लिखिए तथा लिखित प्रश्न के उत्तर दें -***
- ***यमराज ने राजा से क्या पूछा ?***
- ***साधु ने अपने कर्मों का वर्णन किस प्रकार किया ?***
- ***किसान ने अपना गर्दन क्यों झुका लिया ?***

आज के लिए बस इतना ही अगली कक्षा में मिलेंगे....